

चतुर्थ पुश्त पत्र
 भू धातु लृट् लकार
 प्रथम पुरुष

सं. शि. - राजन कुमार
 एस. वी. एस. एस.
 कॉलेज बेगूसराय

एकवच	द्विवच	बहुवच
प्रथम पुरुष	अभविष्यत्	अभविष्यताम्
	अभविष्यत	

1) अभविष्यत् (प्रथम पुरुष एकवचन)

- ⇒ 'लृट्' से लृट् लगाने पर - भू + लृट्
- ⇒ लृट् लृट् लृट्स्वदुहातः से 'भू' की अट् का आगम - अभू + लृट्
- ⇒ लृट् के अनुबंधों को हटाने पर - अभू + लृ
- ⇒ ऊर्ता के पुं पुं एकवचन की विक्षा में - अभू + त्त्वि
- ⇒ स्त्रतासीलृट्पुटोः से 'स्त्र' का विक्रम - अभू + स्त्र + त्त्वि
- ⇒ आर्धधातुस्त्र्येड् वलाहः से 'इट्' का आगम - अभू + इस्त्र + त्त्वि
- ⇒ भार्धधातुकार्धधातुक्योः से इगन् भूडोः - अभो + इस्त्र + त्त्वि
- ⇒ एचोऽयवायावः से 'ओ' की अट् - अभव् + इस्त्र + त्त्वि
- ⇒ आदिषा पुल्यययोः से 'स' को 'ष' - अभव् + इष्य + त्त्वि
- ⇒ मिलाने पर - अभविष्य + त्त्वि
- ⇒ 'त्त्वि' के 'प्' की इत्संज्ञा व लोप - अभविष्य + त्
- ⇒ 'इस्त्र' से 'इ' का लोप - अभविष्य + त्
- ⇒ मिलाने पर रूप सिद्ध - अभविष्यत्

2) अभविष्यत् (प्रथम पुरुष द्विवचन)

- ⇒ 'लृट्' से लृट् लगाने पर - भू + लृट्
- ⇒ लृट् लृट् लृट्स्वदुक्त्रः से 'भू' की अट् का आगम } अभू + लृट्
- ⇒ लृट् के अनुबन्धो को हटाने पर - अभू + लृ
- ⇒ कर्त्ता के ऊपर द्विवचन की विलक्षणता में - अभू + त्स
- ⇒ म्यनासील्लुटोः से 'म्य' का विकरण - अभू + म्य + त्स
- ⇒ आर्धधातुकस्येड् वलादेः से 'इट्' का आगम - अभू + इत् + त्स
- ⇒ सार्वधातुकार्धधातुयोः से इगन् भू } अभो + इत् + त्स
को गुणादेश
- ⇒ एचोऽभवायावः से 'ओ' की उप - अभव + इत् + त्स
- ⇒ आदेश उत्पद्योः से 'श्' की 'ष्' - अभव + इत् + त्स
- ⇒ लस्यश्चमिपां तां त्नामः से 'त्स' का आगम - अभव + इत् + त्स
- ⇒ मिलाने पर - अभविष्यत्
- ⇒ इस प्रकार रूप सिद्ध हुआ - अभविष्यत्

3) अभविष्यन् (प्रथम पुरुष बहुवचन)

- ⇒ 'लृट्' से लृट् लकार लगाने पर - भू + लृट्
- ⇒ लृट् लृट् लृट्स्वदुक्त्रः से 'भू' की अट् का आगम } अभू + लृट्
- ⇒ लृट् के अनुबन्धो को हटाने पर - अभू + लृ

- ⇒ कृत् के प्रथम बहुवचन की विभक्ति में - अभू + झि
- ⇒ श्यमासीलुलुटीः' से 'श्च' का विकरण - अभू + श्य + झि
- ⇒ आर्घ्यानुकल्पेः वसादेः' से इट् की सागम - अभू + इत् + झि
- ⇒ आर्घ्यानुकल्प्यानुकर्मोः' से इगन् भू की कृण - अभो + श्य + झि
- ⇒ एचोऽयवाभावः' से 'ओ' की शप् - अभव् + श्य + झि
- ⇒ आदेशे प्रत्यययोः' से 'श्' की 'ष' - अभव् + श्य + झि
- ⇒ इश्च' से 'झि' के 'इ' का लोप - अभव् + श्य + झि
- ⇒ सोऽन्तः' से 'श्' की 'न्त' आदेश - अभव् + श्य + अन्त
- ⇒ अगोष्ठे' से परस्मैपदस्य कृते पर - अभविष्यन्
- ⇒ संयोगान्तरश्च लोपः' से 'ः' का लोप - अभविष्यन्
- ⇒ इति प्रकार रूप सिद्ध - अभविष्यन्

(2) अन्त